ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे,
स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट,
दास जनों के संकट,
क्षण में दूर करे॥ ॐ जय...

जो ध्यावे फल पावे,
दुःख बिन से मन का।
स्वामी दुःख बिन से मन का,
सुख संपत्ति घर आवे॥ ॐ जय...

मात पिता तुम मेरे,
शरण गहूं मैं किसकी।
स्वामी शरण गहूं मैं किसकी,
तुम बिन और न दूजा॥ ॐ जय...

तुम पूरण परमात्मा,
तुम अन्तरयामी।
स्वामी तुम अन्तरयामी,
पारब्रह्म परमेश्वर॥ ॐ जय...

तुम करुणा के सागर,
तुम पालनकर्ता।
स्वामी तुम पालनकर्ता,
मैं सेवक तुम स्वामी॥ ॐ जय...

तुम हो एक अगोचर,
सब के प्राणपति।

स्वामी सब के प्राणपति,

किस विधि मिलूं दरशा॥ ॐ जय...

नाना विधि भोग लगाऊं,

छप्पन भोग लगाऊं।

स्वामी छप्पन भोग लगाऊं,

भक्त जनों से सेवक॥ ॐ जय...

जनम जनम के पाप,

डूबा संकट से।

स्वामी डूबा संकट से,

तुमसे ही हर प्राणी॥ ॐ जय...

विष्णु लक्ष्मी पति,

सुर नर मुनि जन।

स्वामी सुर नर मुनि जन,

साधु सन्त के जीवन॥ ॐ जय...

सप्त कोटि फ़सल,

चौदह रतन सागर।

स्वामी चौदह रतन सागर,

तुमही जानो भेद॥ ॐ जय...

ध्यान धरें यश गावे,

कहूँ पुरण होवे।

स्वामी कहूँ पुरण होवे,

मनवांछित फल पावे॥ ॐ जय...

आप इस आरती का पाठ नियमित रूप से कर सकते हैं। इससे मन को शांति मिलती है और ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। - www.vashikaranspecialist.co.in